रामानन्दाचार्य और शङ्कराचार्य

श्रीमती अंजना शर्मा

स्वामी रामानन्दाचार्य का ब्रह्म सकललोक-कल्याणकारी वह विशिष्टाद्वैत तत्त्व है, जिसमें समस्त भेदप्रपञ्च, धर्म अथवा विशेषण के रूप में सर्वदा विद्यमान रहता है। इनके ब्रह्म द्वैतविशिष्ट अद्वैत हैं अथवा उससे भी कुछ और अधिक हैं। वह दिव्य व्यक्तित्वसम्पन्न पुरुषोत्तम है, किन्तु शङ्कराचार्य के ब्रह्म ठीक पूर्वोक्त तथ्य के विपरीत उस सिंह की गुफा की तरह अद्वैत ब्रह्म -है, -जिस गुफा में भीतर जाने वाले-जन्तुओं के पदचिह्न तो दिखाई देते हैं, पर बाहर आने वाले किसी भी जन्तु के पदचिह्न नहीं दिखाई देते। शङ्कर का ब्रह्म इसी तरह सर्वभक्षी है। जो एक बार उस ब्रह्म के पास चला गया, उसे वहाँ से लौटने की कोई सम्भावना-शेष-नहीं रहती। प्रलयकाल में भी रामानुजाचार्य का ब्रह्म सूक्ष्मरूपी जीव और जगत् को धारण कर विशिष्ट बना रहता है औश्र सृष्टिकाल मे भी वह जीव और जगत् स्थूल रूप धारण कर लेते हैं, उस समय भी वह स्थूल चित् और अचित् से विशिष्ट ही बना रहता है - स्थूलसूक्ष्मचिदचित्प्रकारकं ब्रह्मैव कारणं चेति ब्रह्मोपादानं जगत् (श्रीभाष्य)। शङ्कराचार्य के अनुसार ब्रह्म निर्विश, अपरिमित और अद्वैत है। स्वामी रामानन्द गुण और गुणी में भिन्नता स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार ब्रह्म सभी छन्दों से विनिर्मुक्त अद्वैत ही रहता है।

रामानन्द के अनुसार ब्रह्म स्त्रष्टा है, सृष्टिकर्त्ता है। तदनुसार सृष्टिकर्त्ता और उनकी सृष्टि दानों ही सत्य हैं। शङ्कर के अनुसार ब्रह्म का सृष्टिकर्त्तारूप तो माया के कारण है। ब्रह्म का माया की उपाधि के कारण ईश्वर कहलाना केवल व्यावहारिक दृष्टि से सत्य है। पारमार्थिक दृष्टि से न सृष्टि है और न स्त्रष्टा। रामानन्द ने दार्शनिक चिन्तन और धार्मिक भावना का तथा उपनिषद् के ज्ञान आलवार सन्तों की भक्ति का सुन्दर समन्वय किया है। इन पर आलवार सन्तों का, पूर्ववर्त्ती भेदाभेदवादियों का पर्याप्त प्रभाव परिलक्षित होता है। इन्होंने पञ्चचरात्र वैष्णव ईश्वरवाद और औपनिषदिक ब्रह्मवाद में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। शङ्कराचार्य ने दर्शन और धर्म में समन्वय स्थापित किया है। शङ्कर के लिये वेदान्त-प्रस्थानत्रय मुख्य थे और उन्होंने उनके आधार पर दार्शनिक चिन्तन और धार्मिक भावना में समन्व्य किया है।

रामानन्द का ईश्वर उपास्य देव है। भक्त की शरणगति और प्रपत्ति से प्रसन्न हो वह भक्त को परम गति अर्थात् सामीप्य प्रदाना करता है। अतः रामानन्द का ईश्वर धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। शंकराचार्य के अनुसार भक्ति और प्रपत्ति का केवल व्यावहारिक महत्त्व है। ब्रह्म की सत्ता तो ज्ञानगम्य

है। ब्रह्म तो सर्वात्मज्ञान है। इसका साधन केवल ज्ञान है। रामानन्द मूर्त्त देवता है। रामानन्द अपने ब्रह्म को नारायण-पुरुषोत्तम आदि कहते है, पर शंकर का ब्रह्म एक अमूर्त्त विज्ञान है। रामानन्द के अनुसार आत्मा तो जीवात्मा है। जीवात्मा और परमात्मा में अंश और अंशी का सम्बन्ध है। परमात्मा आधार और जीवात्मा आधेय है। अत: दोनों में आधाराधेय सम्बन्ध है। यहाँ जीवात्मा को प्रकार और परमात्मा को प्रकारी माना गया है। इनके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा में अल्पज्ञ और सर्वज्ञ का भेद है। अत: इनके अनुसार 'तत्त्वमसि' आदि महावाक्यों का अर्थ भेदसहित अभेद है। शङ्कराचार्य के अनुसार ब्रह्म विशुद्ध, विज्ञान और चैतन्य है। वह एक, अद्वितीय और आत्मा है। आत्मा और ब्रह्म में अभेद है। इस अभेद का स्वरूप है - 'तत्त्वमसि' अयमात्मा सर्वशक्तिमान ईश्वर है। इसके विपरीत शङ्कराचार्य का ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष, निरञ्जन है। रामानन्द चित् और अचित् की भिन्नता के कारण ब्रह्म में स्वगतभेद मानते हैं। शङ्कराचार्य के ब्रह्म सजातीय, विजातीय और स्वगतभेदरहित है। रामानुज की दृष्टि में जीवात्मा ब्रह्म से भिन्न तथा अनेक है, पर शङ्कर जीवात्मा को ब्रह्म से अभिन्न तथा एक मानते हैं। विशिष्टाद्वैत में ज्ञान को आत्मा का धर्म माना गया है, पर अद्वैत में ज्ञान को आत्मा का स्वरूप ही माना गया है, पर यह भी सत्य है कि अद्वैत वेदान्तियों को व्यवहार में विशिष्टाद्वैत के बहुत सारे सिद्धान्तों को स्वीकार कर लेने में कोई संकोच नहीं हुआ है। दोनों आचार्यो की भारतीय दर्शन को यह अमूल्य देन है।

निदेशक

पद्मश्री नारायणदास रामानन्द दर्शन, शोध केन्द्र, जयपुर